हवे तो सर्वे में सोंप्यूं तुझने, मूल सनमंध सुध जोई।
कहे इन्द्रावती मुझ विना, तूंने एम वस न करे बीजो कोई।। ४ ।।

और जब मैंने मूल परमधाम की निसबत जानकर अपना सब कुछ समर्पित कर दिया। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि हे वालाजी! मेरे बिना दूसरा कोई भी आपको इस तरह से वश में नहीं कर सकता।

॥ प्रकरण ॥ ४३ ॥ चौपाई ॥ ४८० ॥

म्हारा वस कीधल वाला रे, अमथी अलगा केम करी थासो।
हूं तो एवी नहीं रे सोहाली, जे वचनिऐं वहासो।। १ ।।

हे मेरे वश में आए हुए वालाजी! आप मेरे से अलग कैसे होंगे? मैं इतनी भोली नहीं हूं कि आप मुझे अपने वचनों से बहका दोगे।

ए तो नहीं अटकलनी ओलखांण, जे ततखिण रंग पलटाओ।
सनमंधीनों रंग नेहेचल साचो, जिहां हूं तिहां तमें आवो।। २ ।।

यह अटकल की पहचान नहीं है कि जो आप तुरन्त भूल जाओ। मेरी आपकी अखण्ड निसबत का प्रेम है, इसलिए जहां मैं हूं वहां आप आओ।

हवे अधखिण एक न मूकूं अलगा, प्रीत पेहेलानी ओलखाणी।
साची सगाई कीधी प्रगट, सचराचर संभलाणी।। ३ ।।

अब मैं आपको आधे क्षण के लिए भी नहीं छोडूंगी, क्योंकि मुझे मूल घर के प्रेम की पहचान हो गई है। हमारे बीच धनी धन्यानी (स्वामिनी) का नाता है। यह यहां चर-अचर सभी ने जान लिया है।

प्रेम विनोद विलास माया मांहें, सुफल फेरो एम कीजे।
अखण्ड आनंद सदा इंद्रावती घरे, पूरण सुख लाहो लीजे।। ४ ।।

अब माया में आकर प्रेम से विनोद और विलास करो ताकि यहां आना सफल हो जाए और पूर्ण सुख का लाभ मिल जाए। वैसे घर (परमधाम) में तो सदा ही अखण्ड आनन्द है।

॥ प्रकरण ॥ ४४ ॥ चौपाई ॥ ४८४ ॥

राग श्री काफी

आवोजी वाला म्हारे घेर, आवो जी वाला।
एकलडी परदेसमां, मूने मूकीने कां चाल्या।। १ ।।

हे मेरे वालाजी! मेरे घर (हृदय में) आइए। परदेश (विदेश) में मुझे अकेली छोड़कर आप कहां चले गए?

मूने हती नींदरडी, तमे सूती मूकी कां राते।
जागी जोऊं तां पिउजी न पासे, पछे तो थासे प्रभाते।। २ ।।

मुझे इस माया के संसार में अज्ञानता की नींद थी। आप मुझ सोती को छोड़कर कहां चले गए? होश में आकर देखा तो धनी पास में नहीं दिखाई पड़े। रात बीतने पर तो सवेरा हो जाएगा, अर्थात् जीवन रूपी रात बीतने पर परमधाम में जग जाएंगे।

Nijanand App